आई.एस.आई.एस. की चुनौती

आंतरिक सुरक्षा पर जिहादी खतरा

भारत नीति प्रतिष्ठान
India Policy Foundation

Inside Front Cover

आई.एस.आई.एस. की चुनौती

आंतरिक सुरक्षा पर जिहादी खतरा

लेखक

मनमोहन शर्मा

सीनियर फेलो, भारत नीति प्रतिष्ठान

भारत नीति प्रतिष्ठान
India Policy Foundation

प्रतिष्ठान की नीति के तहत हम इस पुस्तक
की विषयवस्तु के संदर्भ सहित पूर्ण या
आंशिक प्रयोग को प्रोत्साहित करते हैं।

प्रकाशक :

भारत नीति प्रतिष्ठान
डी-51, हौज खास,
नई दिल्ली-110016 (भारत)
दूरभाष : 011-26524018
फैक्स : 011-46089365
ई-मेल : indiapolicy@gmail.com
वेबसाइट : www.indiapolicyfoundation.org

संस्करण : प्रथम, मार्च 2016

© भारत नीति प्रतिष्ठान

ISBN : 978-93-84835-09-5

मूल्य : 50 रुपये मात्र

मुद्रक :
मानसी प्रिंटर्स
पॉकेट बी-35डी, दिलशाद गार्डन,
दिल्ली-110095
ई-मेल : maanseeprinters@yahoo.co.in

अनुक्रम

1.	भारत में जमीन की तलाश	1
2.	खिलाफत का नया संस्करण	9
3.	इस्लामिक स्टेट का असली चेहरा	14
4.	इस्लामी देशों में मतभेद	18
5.	खिलाफत का इतिहास	22

1 भारत में जमीन की तलाश

भारत में कुख्यात इस्लामी आतंकवादी संगठन दौलत इस्लामिया इराक और शाम (इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एण्ड सीरिया) का मकड़जाल तेजी से फैल रहा है। हाल ही में इस्लामी देशों की गुप्तचर एजेंसियों से प्राप्त जानकारी के आधार पर देशभर में 50 से अधिक ऐसे लोगों को हाल ही में गिरफ्तार किया गया है जिनके तार इस इस्लामी संगठन से जुड़े हुए हैं। चौंकाने वाली बात यह है कि गिरफ्तार किए गए आतंकवादियों का संबंध देशभर के सभी राज्यों से है। इससे यह साफ है कि यह खूंखार इस्लामी संगठन भारत के प्रत्येक भाग में अपने पैर पसार चुका है। गिरफ्तार किए गए लोगों में डेढ़ दर्जन मस्जिदों के इमाम हैं जिन्होंने इस्लामी मदरसों में शिक्षा प्राप्त की। पकड़े गए लोगों का प्रमुख दिल्लीवासी मुफ्ती अब्दुस सामी बताया जाता है जो कि उत्तर प्रदेश के रामपुर जिले का रहने वाला है। इसने चार वर्ष तक दारूल उलूम देवबंद में शिक्षा प्राप्त की थी। इसी तरह से जो अन्य मौलवी और इमाम पकड़े गए हैं उन्होंने भी मुस्लिम मदरसों से शिक्षा प्राप्त की हैं। इस बात से मुसलमानों के इस दावे का पूरी तरह से खंडन होता है कि इस्लामी मदरसों का उग्रवाद से कोई संबंध नहीं है। सच तो यह है कि ये इस्लामी मदरसे खूंखार जिहादी तैयार करने वाली फैक्ट्रियां हैं। अन्य जिन युवकों की गिरफ्तारी हुई हैं वे उच्च शिक्षा प्राप्त और आईटी के माहिर हैं। इन लोगों को आईएस के जाल में फंसाने के लिए इंटरनेट का जमकर इस्तेमाल किया गया।

इससे इस बात की पुष्टि होती है कि इस्लामिक स्टेट का स्वयंभु खलीफा अबू बकर अल बगदादी अगले पांच वर्षों में भारत को इस्लामी देश बनाने के लक्ष्य में जुटा हुआ है। बगदादी गंजवा हिन्द के अपने बहुचर्चित और खतरनाक योजना को कार्यान्वित करने में जुटा हुआ है। गंजवा हिन्द का शाब्दिक अर्थ है इस्लाम को फैलाने के लिए भारत पर जिहाद द्वारा कब्जा करके उसका पूर्णत: इस्लामीकरण करना।

विश्व के अधिकतर देश आई.एस. के आतंकी गतिविधियों के गिरफ्त में हैं। लेकिन यह संगठन भारत में अपना प्रभाव जमाने में इसलिए असफल रहा क्योंकि भारत में परिवार और परम्परा इतनी मजबूत है कि आई.एस. जैसे संगठन भी मुस्लिम समाज में घुसपैठ नहीं कर पा रहे हैं। आज आई.एस. की चर्चा काफी हो रही है। लेकिन भारत के गृहमंत्री की हैसियत से मैं यह कह सकता हूं कि भारत एक मात्र ऐसा देश है जहां के मुस्लिम परिवारों ने अपने बच्चों को राह भटकने से उन्हें रोका है।

केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह लखनऊ में
मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय के एक कार्यक्रम में।

दु:ख की बात है कि जब सरकार इस्लामी जिहादी मकड़जाल का तहस-नहस करने के लिए कदम उठाती है तो मुस्लिम नेता इस बात का शोर मचाने लग जाते हैं कि आईएस की आड़ में बेगुनाह मुसलमानों को गिरफ्तार किया जा रहा है। इस बार भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने देश के इन गद्दारों को गिरफ्तार किया मुस्लिम समाज में हंगामा मच गया। मुस्लिम नेताओं का एक प्रतिनिधिमंडल गृहमंत्री राजनाथ सिंह से मिला और कहा कि बेगुनाह मुस्लिम युवकों को जानबूझकर एक षड्यंत्र के तहत झूठे आरोपों में फंसाया जा रहा है। इसके साथ ही उर्दू समाचारपत्रों ने मोदी सरकार के खिलाफ दुष्प्रचार का अभियान तेज कर दिया। प्रमुख आरोपी मुफ्ती अब्दुस सामी कासमी के पक्ष में प्रचार किया गया कि मौलाना निर्दोष हैं और वे सिर्फ धर्मप्रचार करते हैं। मौलाना दिल्ली के सीलमपुर में कई इस्लामी मदरसे चला रहे हैं। राष्ट्रीय जांच एजेंसी का दावा है कि मौलाना के तार आईएस से जुड़े हुए

केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह मुस्लिम प्रतिनिधिमंडल से बातचीत करते हुए

हैं और उन्हें जिहादियों को भर्ती करने के लिए बड़ी मोटी रकम अरब देशों से प्राप्त होती रही है। गत दिनों मेवात के 32 वर्षीय अब्दुल सामी को जमशेदपुर से गिरफ्तार किया गया। कहा जाता है कि ये इमाम झारखंड, पश्चिम बंगाल और बिहार से इस्लामिक स्टेट के लिए जिहादियों की भर्ती का काम करता था और उसने कोलकाता के मदरसों से 100 से अधिक नौजवानों को इस जिहादी संगठन में भर्ती करवाया था। इनको चोरी छिपे प्रशिक्षण दिलाने के लिए अफगानिस्तान, बांग्लादेश और पाकिस्तान भेजा गया था। उड़ीसा से इस गिरोह के तीन अन्य व्यक्तियों को भी गिरफ्तार किया गया जिनके नाम अब्दुर्रहमान, मोहम्मद आसिफ और यूसुफ बताया जाता है। गिरफ्तार किए गए आतंकवादियों में से अब्दुर्रहमान को कटक से, जफर मसूद को संभलपुर से और मौलाना अल नजर शाह को बेंग्लुरु से पकड़ा गया। ये सभी लोग इन नगरों में इस्लामी मदरसों का संचालन करते थे और मदरसों के छात्रों को आईएस के लिए भर्ती करते थे। इन सभी लोगों ने दारूल उलूम देवबंद से शिक्षा प्राप्त की है। इनसे मिले सुराग पर 14 अन्य व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया जो कि इस्लामिक स्टेट के लिए आईटी विशेषज्ञों को भर्ती करते थे।

अब्दुल सामी

आई.एस. के खिलाफ अहले हदीस ने 2006 में ही फतवा जारी किया था और अब हम पूरे देश में इसके खिलाफ अभियान के लिए उलेमा को तैयार करेंगे जो खुत्बों के मार्फत दहशतगर्दी के खिलाफ लोगों को जागरूक करेंगे।

असगर अली इमाम मेहदी सल्फी,
महासचिव, जमीयत अहले हदीस

इनकी गिरफ्तारी हैदराबाद, बेंगलुरु, तुमकुरु, लखनऊ और औरंगाबाद से की गई। इनके कब्जे से अनेक लैपटॉप, मोबाइल फोन, जिहादी साहित्य, बरामद हुआ है जिनसे इस बात की पुष्टि होती है कि इनका संबंध इन आतंकवादी संगठन से था। गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पूछताछ से यह भी पता चला कि इनको आईएस के जाल में फंसाने वाला मुंबई का मुद्दबीर मुख्तार शेख था। उसका संपर्क बेंग्लुरु के अब्दुल आहिद से जुड़ा हुआ था। आहिद को तुर्की से उस समय छह लोगों के साथ निष्कासित किया गया जब वह सीरिया के गुप्त शिविरों से आईएस के लडाके का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद तुर्की में दाखिल हुआ था। बगदादी के निर्देश पर उसने एक उग्रवादी संगठन की स्थापना भारत में की थी। जिसका नाम जुनैद उल खलीफा ए हिन्द (खलीफा के हिन्दुस्तानी जिहादी) रखा। इसके कब्जे से राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने कई लाख रुपये बरामद किए हैं जो उसे विदेशी स्रोतों से प्राप्त हुए थे। कहा जाता है कि उसे इस्लामिक स्टेट में शफी अरमार नामक व्यक्ति ने भर्ती किया था जिसका भाई खिलाफत की ओर से लड़ता हुआ सीरिया में मारा गया था।

मुद्दबीर मुख्तार शेख

महाराष्ट्र पुलिस के अनुसार मुंबई के समीप मुंब्रा से मुद्दबीर मुख्तार शेख को उस वक्त पकड़ा गया जब वह सीरिया जाने की तैयारी कर

रहा था। शेख की पत्नी उज्मा ने इस बात की पुष्टि की कि उसके पति का संबंध इस्लामी संगठन से था। उज्मा ने यह भी स्वीकार किया कि उसका जिहादी पति महाराष्ट्र के विभिन्न नगरों के मस्जिदों में जाकर ठहरता था और वहां से जिहादियों की भर्ती करता था। पुलिस के अनुसार शेख अपनी गतिविधियों की रिपोर्ट सीधा खलीफा अबू बकर अल बगदादी को दिया करता था। पिछले छह महीने में उसे विदेशी सूत्रों से 30 लाख रुपये प्राप्त हुए थे। शेख से पूछताछ के बाद भोपाल निवासी अजहर इकबाल को गिरफ्तार किया गया। यह व्यक्ति ओबेदुल्लागंज का रहने वाला है। यह एक अन्य उग्रवादी लईक अहमद के घर में छिपा हुआ था।

सबसे खतरनाक बात यह है कि भारतीय सुरक्षा एजेंसियां देशभर में फैले हुए इस्लामिक स्टेट के मकड़जाल से पूरी तरह बेखबर थी। अरब देशों की विभिन्न मुस्लिम सरकारों के इस्लामिक स्टेट से जो मतभेद प्रतिदिन बढ़ रहे हैं वे भारत के लिए बेहद लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं। संयुक्त अरब अमीरात के विदेश मंत्री ने भारत सरकार को चेतावनी दी है कि इस्लामिक स्टेट से भारत में खतरा बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। खलीफा अबू बकर अल बगदादी भारत को पांच वर्ष के भीतर इस्लामी देश में बदलने का मंसूबा पाले हुए है। जम्मू-कश्मीर में तो इस्लामिक स्टेट ने अपनी एक शाखा भी स्थापित कर रखी है। हैदराबाद की एक महिला को भारत सरकार के हवाले किया है जो कि इस्लामिक स्टेट के लिए धनराशि इक्ट्ठे करने के अतिरिक्त भारतीय नौजवानों को जिहाद के लिए भर्ती करने का भी काम किया करती थी। इसके अतिरिक्त तीन अन्य नौजवानों को भी भारत सरकार के हवाले किया गया जिनका संबंध आईएस से था। हाल ही में केरल के चार युवकों को भी संयुक्त अरब अमीरात सरकार ने भारत के हवाले किया है।

इस्लामिक स्टेट की भारत में गतिविधियों के बारे में भारतीय सुरक्षा एजेंसियां कुछ पुख्ता ढूंढ पाने में अब तक असफल रही हैं। इस जिहादी संगठन से संबंधित अब तक जो भी लोग पकड़े गए हैं वे विदेशी सूत्रों से प्राप्त मिली जानकारी के आधार पर पकड़ में आए हैं। इजराइली गुप्तचर एजेंसी मोसाद के अनुसार 500-1000 तक भारतीय मूल के नौजवान और युवतियां खलीफा बगदादी के सेना में शामिल होकर जंग करने में लगे हुए हैं। जिहाद के मैदाने जंग से फरार होने के आरोप में जिन दो हजार व्यक्तियों को सार्वजनिक रूप से मृत्युदंड दिया गया है उनमें 50-100 के बीच भारतीय बताए जाते हैं।

आई.एस. एक दहशतगर्द तंजीम है और इसका इजरायल और अमेरिका से संबंध है। मैं यह सब बात इसलिए कह रहा हूं क्योकि आई.एस. के चंगुल से भागकर आए तीन युवकों ने मुझे बताया कि आई.एस. के घायल सिपाहियों का इलाज इजरायल में होता है।

मौलाना अरशद मदनी,
अध्यक्ष, जमीयत उलेमा-ए-हिन्द

हमारे देश में दर्जनों जगहों पर इस्लामिक स्टेट के समर्थन में और भारतीयों को जिहाद में शामिल होने के लिए प्रेरणा देने वाला खतरनाक साहित्य छप रहा है। यह सिलसिला गत दो वर्षों से जारी है। मगर हमारी सुरक्षा और गुप्तचर एजेंसियां इसके बारे में अभी तक बेखबर हैं। अमेरिकन गुप्तचर संगठनों से मिली जानकारी के अनुसार भारत में जिहादी साहित्य तैयार करने और उसे छापने का सबसे बड़ा केन्द्र दिल्ली के ओखला क्षेत्र में स्थित अबुल फजल इंकलेव है। यहां पर देश की जनता को बरगलाने और उन्हें जिहादी फोर्सेस में भर्ती होने के लिए भड़काने वाला साहित्य उर्दू, फारसी और अरबी में प्रकाशित किया जा रहा है। अजीब बात यह है कि दिल्ली से इस जहरीले साहित्य को देश भर के मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में निरंतर वितरित किया जा रहा है। गत एक वर्ष में देश के कई अन्य राज्यों में भी इस भड़काऊ साहित्य को प्रकाशित करने और उसे क्षेत्रीय भाषाओं में रूपान्तरित करके बांटने के दो दर्जन नए केन्द्र स्थापित किए गए हैं। इन केन्द्रों में लखनऊ, हैदराबाद, रांची, श्रीनगर, सहारनपुर, मालदा, गुवाहाटी एवं कासरगोड उल्लेखनीय हैं। इस भड़काऊ साहित्य को मदरसों और मस्जिदों के माध्यम से जनता तक पहुंचाया जा रहा है।

देश में क्योंकि इस्लामिक स्टेट पर सरकार ने प्रतिबंध लगा रखा है इसलिए इस संगठन के समर्थकों ने कानून से बचने के लिए देश में विभिन्न नामों पर अनेक संगठन रातों-रात स्थापित कर लिए हैं। इनके नाम भले ही कुछ भी हों लेनिक इनका लक्ष्य सिर्फ यह है कि इस्लामिक स्टेट के खतरनाक जिहादी

आई.एस.आई.एस. के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते हुए

मंसूबों का भारतीय जनता के बीच में प्रचार किया जाए और उन्हें भारत के इस्लामीकरण करने के लिए जिहाद छेड़ने के लिए भड़काया जाए। विदेशी गुप्तचर सूत्रों के अनुसार देश के विभिन्न भागों में इन दिनों 50 से लेकर 100 तक ऐसे खतरनाक संगठन सक्रिय हैं। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में दर्जन भर जिहादी संगठनों का एक संयुक्त मंच यूनाइटेड जिहाद काउंसिल बनाया गया है। जिसके प्रमुख सैयद सलाहुद्दीन ने यह दावा किया है कि कश्मीर के जिस भाग पर भारत ने जबरन कब्जा कर रखा है उसे इराक में स्थापित पैन-इस्लाम जिहादी संगठनों के जंगजुओं की मदद से जल्द से जल्द आजाद करवा लिया जाएगा। उसने यह भी दावा किया कि अनेक आतंकवादी संगठनों जैसे हरकत उल अंसार, हिज्बुल मुजाहिदीन, जमायत-उल मुजाहिद, अल जिहाद, अल बर्क, अल बदर, इख्वानुल मुस्लिमीन और तहरीखे मुजाहिदीन ने अपना नाता इस्लाम के नए खलीफा अबू बकर अल बगदादी और उसके संगठन इस्लामिक स्टेट से जोड़ने का फैसला किया है। उसने कहा कि कश्मीर को भारत की गुलामी से आजाद करवाने के लिए हम किसी भी जिहादी संगठन का सहयोग लेंगे। हमारे जिहादी संगठनों का जाल पूरे जम्मू-कश्मीर में फैल चुका है।

तमिलनाडु में इसी तरह का एक अन्य संगठन ऑल इंडिया तौहिद जमात स्थापित हुआ है। जिसने वहां पर अपने पैर फैलाने शुरू कर दिए हैं। जनवरी, 2016 में इस जिहादी संगठन ने एक सम्मेलन 'खातमा सर्क कांफ्रेंस' का आयोजन तिरूची में किया गया था। बताया जाता है कि इस नए संगठन की स्थापना एक मुस्लिम नेता पी. जैनुलाबुद्दीन ने की है। इस सम्मेलन में एक लाख मुस्लिम शामिल हुए थे जिसमें यह फैसला किया गया कि इस्लाम के दुश्मनों का सफाया करने के लिए जिहाद छेड़ा जाए।

इसी तरह से असम में एक नया संगठन तहफुज इस्लाम स्थापित किया गया है। इसका सम्मेलन हाल में ही ग्वालपाड़ा में हुआ जिसमें मुसलमानों की आजादी के लिए जिहाद छेड़ने की घोषणा की गई। तेलंगाना भी जिहादी नक्शे पर बड़ी तेजी से उभर रहा है। हैदराबाद में हाल ही में हिमायते इस्लाम नामक संगठन की ओर से एक विशाल कांफ्रेंस का आयोजन किया गया जिसमें इस्लाम की रक्षा करने के लिए ठोस कार्यक्रम तैयार करने का फैसला किया गया। सबसे खतरनाक बात यह है कि हरियाणा स्थित मेवात क्षेत्र के नगीना कस्बे में भी इन दिनों इस्लामिक सम्मेलनों का सिलसिला बड़े जोरो से चल रहा है। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में 'हिमायते रसूल' नामक संगठन का एक सम्मेलन हुआ है।

आई.एस. और अलकायदा जैसे आतंकवादी संगठन अपने आप को इस्लाम से जोड़ते हैं और यह दावा करते हैं कि वे इस्लाम के अनुयायी हैं। लेकिन इनके क्रियाकलाप पूरी तरह से इस्लाम की शिक्षा के खिलाफ हैं। इस्लाम में मासूमों के कत्ल को कहीं से भी जायज नहीं कहा गया है। बल्कि अगर आप किसी मासूम की रक्षा करते हैं तो आप इस्लाम की रक्षा करते हैं।

मौलाना सैयद कल्बे जवाद,
शिया मुस्लिम नेता

अब यह कोई रहस्य की बात नहीं रही कि तब्लीगी जमात द्वारा देश भर में जो विशाल इस्लामी इजतेमा (महासम्मेलन) का आयोजन किया जा रहा है उसका लक्ष्य भी भारत में आई.एस. और बगदादी की जड़ें जमाना है। बगदादी से संपर्क रखने वाले संगठन रातों-रात बनते हैं इसलिए गुप्तचर एजेंसियों के लिए उनका पूरा ब्यौरा प्राप्त करना और उनपर नजर रखना आसान नहीं है। देश के जिन राज्यों में गैर-भाजपा सरकारें हैं वे सेकुलरवाद के मोहजाल में फंसने के कारण ऐसे राष्ट्रद्रोही तत्वों की गतिविधियों की उपेक्षा करके उन्हें नया जीवन प्रदान करने में लगी हुई हैं।

2 खिलाफत का नया संस्करण

सीरिया में विगत कई वर्षों से जो गृहयुद्ध चल रहा था उसमें फिलहाल शांति स्थापना के लिए प्रयास शुरू हो गए हैं मगर उसकी सफलता के आसार नजर नहीं आते हैं। क्योंकि सीरिया पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए रूस और अमेरिका में होड़ लगी हुई है। नए आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट की स्थापना के बाद अरब जगत में वर्चस्व का संघर्ष तेज हो गया है। इराक के प्रधानमंत्री नूरी अल मलिकी को हटाकर उनकी जगह हैदर अल-आबादी को प्रधानमंत्री बनाया गया है। मगर इराक और सीरिया में जिहादियों द्वारा खेली जा रही खूनी होली में कोई विशेष अंतर नहीं आया। इराक में 5 जुलाई, 2013 को अबू बकर अल बगदादी ने स्वयं को खलीफा घोषित किया था। इसके साथ ही इस्लामिक स्टेट नामक एक नए राष्ट्र की घोषणा कर दी थी।

अबू बकर अल बगदादी

मोहसिल की मस्जिद में खलीफा के वेष में अल बगदादी ने यह घोषणा की है कि चूंकि वह दुनिया भर के मुसलमानों का खलीफा है इसीलिए उसका आदेश मानना हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है। इसके साथ ही इस नई खिलाफत का एक मानचित्र भी जारी किया गया है जिसमें विश्व के 73 देशों को इसका अंग बताया गया है। ये सभी देश किसी जमाने में उस्मानिया खिलाफत का अंग हुआ करते थे। ये देश एशिया, अफ्रीका और यूरोप में स्थित हैं। इनमें से 43 देश ऐसे हैं जिनमें इन दिनों इस्लामी शासन नहीं है। बगदादी ने अपना नया नामकरण 'खलीफा इब्राहिम' के रूप में किया है और मुसलमानों से यह अपील की है कि वे नई खिलाफत के विजय अभियान में शामिल होने के लिए विश्वभर के देशों से सीरिया और इराक पहुंचे।

नई इस्लामी खिलाफत का झंडा

इस्लाम में उग्रवाद और आतंकवाद की पुरानी परम्परा है। ब्रिटेन के सुरक्षा विशेषज्ञ फैंक गॉर्डनर के अनुसार नए इस्लामी खिलाफत का झंडा काले रंग का है। जोकि कभी हजरत मोहम्मद का झंडा हुआ करता था। इस झंडे पर हजरत मोहम्मद की मोहर अंकित है। जिसमें लिखा गया है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य ईश्वर नहीं है। इस तरह से नई खिलाफत ने संदेश देने का प्रयास किया है कि वही इस्लाम का असली उत्तराधिकारी है। इस नई इस्लामी खिलाफत की पृष्ठभूमि को ठीक से समझने के लिए इस बात पर विचार करना चाहिए कि खिलाफत के अंत के बाद 1924 में मिस्र में मुस्लिम ब्रदरहुड नामक एक जिहादी संगठन का उदय हुआ जिससे अलकायदा और अन्य उग्रवादी संगठनों ने प्रेरणा ली। यही संगठन इस नई खिलाफत का प्रेरणा स्रोत है। हालांकि न्यूयॉर्क टाइम्स का कहना है कि यह नई खिलाफत वहाबी सम्प्रदाय से प्रभावित है। इन दिनों वहाबियों की सउदी अरब में हुकूमत है। सलाफियों का कहना है कि मुस्लिम समाज की स्थापना के लिए यह जरूरी है कि गैर-मुस्लिम देशों से जिहाद किया जाए ताकि वहां पर इस्लामिक शासन की स्थापना की जा सके। आलोचकों का कहना है कि यह नया संगठन सुन्नी नहीं है बल्कि खार्जियों का नया रूप है। मगर अब सउदी अरब का शासक वर्ग यह दावा करता है कि इस नए इस्लामी संगठन को यहूदियों ने इस्लाम में विघटन करने के लिए स्थापित किया है। हाल में ही जॉर्डन की एक जेल से अबू मोहम्मद अल मकदसी को रिहा किया गया है। इस रिहाई का उद्देश्य यह है कि नई खिलाफत के खिलाफ सुन्नी मुसलमानों के एक वर्ग को संगठित किया जाए। इस रिपोर्ट में यह दावा किया गया है कि गत दो वर्षों में इस नए इस्लामी संगठन ने 12 यूरोपीय पत्रकारों को बंदी बनाया और इनमें से 8 को मोटी रकम लेकर कैद से छोड़ा जबकि शेष 4 पत्रकारों की हत्या कर दी। नई खिलाफत ने 102 करोड़ डॉलर की धनराशि फिरौती के रूप में विभिन्न पश्चिमी देशों से वसूल की है। जबकि 2050 करोड़ डॉलर की धनराशि उसे तेल के

भंडार बेचकर प्राप्त हुई है। विपुल धनराशि का इस्तेमाल नई खिलाफत नए क्षेत्र में अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने के लिए कर रहा है। विदेशों में यह चर्चा भी गर्म है कि यूरोप, अमेरिका और चीन के गुप्त बाजार से नई खिलाफत भारी मात्रा में अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्र खरीद रही है। अमेरिकी समाचार पत्र 'वाशिंगटन पोस्ट' का दावा है कि इराक में कई टन रेडियो एक्टिव यूरेनियम भी नई खिलाफत के हाथ लगी है जिससे परमाणु बम बनाए जाने की सम्भावना है।

जहां तक भारत का सम्बंध है इस नई खिलाफत के मानचित्र में सम्पूर्ण भारत को इस्लामी खिलाफत का हिस्सा बताया गया है। नए खलीफा ने यह घोषणा की है कि भारत सहित सभी गैर-मुस्लिम शासित देशों का पांच वर्ष के अन्दर सम्पूर्ण इस्लामीकरण कर दिया जाएगा। उसने दुनियाभर के मुस्लिमों से अपील की है कि वे इस जिहाद में भाग लें। कुरान और हदीस के अनुसार यह हर मुसलमान का धार्मिक कर्त्तव्य है कि वे खलीफा के आदेश का पालन करें और जो खलीफा के आदेश का पालन नहीं करता वह इस्लाम से विद्रोह करता है जिसकी सजा मौत है। नए खलीफा ने यह भी घोषणा की है कि भारत में जिहाद की शुरुआत कश्मीर से की जाएगी। इसके बाद सारे हिन्दुस्तान को युद्ध के मैदान (दारुल हरब) से परिवर्तित करके इस्लामी देश (दारुल इस्लाम) में बदल दिया जाएगा। नए खलीफा की इस घोषणा के साथ ही कश्मीर में जिहादियों ने नई खिलाफत के झंडे हाथ में लेकर भारत सरकार के खिलाफ उग्र प्रदर्शन करना शुरू कर दिया है। इसके साथ ही पाक अधिकृत कश्मीर की राजधानी मुजफ्फराबाद में संयुक्त जिहाद काउंसिल के चैयरमैन सैयद सलाउद्दीन ने यह घोषणा की है कि सीरिया के मॉडल पर कश्मीर को भारत के चुंगल से आजाद करवाने के लिए जिहादी जवान अपना खून बहाने के लिए तैयार हैं। उसने यह भी कहा कि अब दुनिया की कोई भी ताकत कश्मीरियों को गुलाम नहीं रख सकेगी।

स्वयंभू खलीफा अबू बकर अल बगदादी ने यह भी घोषणा की है कि नई खिलाफत में शिया मुस्लिमों और गैर-मुस्लिमों के लिए कोई स्थान नहीं होगा। उसने यह भी धमकी दी है कि इराक स्थित शियाओं के सभी पवित्र तीर्थ स्थानों का नामों-निशान मिटा दिया जाएगा। उसकी इस घोषणा की भारत सहित उन सभी देशों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई है जहां शिया रहते हैं। खास बात यह है कि नया खलीफा सुन्नियों से भी संतुष्ट नहीं है। उसने घोषणा की है कि इस वक्त पवित्र काबा पर जो लोग काबिज हैं वे सच्चे मुसलमान नहीं हैं। इसलिए उनका सफाया करके काबा को उनके चुंगल से मुक्त करवाना भी नई खिलाफत का

लक्ष्य है। इस तरह से नए खलीफा ने सउदी अरब के सुन्नी शासकों के खिलाफ भी जिहाद छेड़ने की घोषणा कर दी है।

नई खिलाफत का अरबी में नाम 'अल दवा अल इस्लामिया वल इराक व शाम' है। इसका झंडा काले रंग का है और उस पर लिखा है 'अल्लाह का रसूल मोहम्मद है और अल्लाह ही अल्लाह है।' उसका मोटो है 'बाकिया' जिसका शाब्दिक अर्थ है 'सदा रहो और सदा फैलो।' उसका राष्ट्रगान है उ मेती काद ला फाजरन मेरी उम्मा (दुनिया भर के मुसलमान सूर्य उदय हो गया है)"। अमेरिकी गुप्तचर एजेंसी सीआईए के अनुसार नई खिलाफत के सैनिकों की संख्या 50 से 70 हजार के बीच है। जबकि कुर्दिश सरकार के अनुसार इनकी संख्या दो लाख के लगभग है। ये सभी लोग आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्र से लैस हैं, जोकि उन्हें इराक और सीरिया की सेनाओं से प्राप्त हुए थे। इन दोनों देशों की सेनाओं ने बिना एक गोली चलाए अपने सभी अस्त्र-शस्त्र, टैंक, मिसाइल और वायुयान नई खिलाफत को सौंप दिए थे। नई खिलाफत का प्रधान सेनापति अबू उमर अल शिस्तानी है। इस नई खिलाफत के नियंत्रण में 50 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र है। न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार इस नई खिलाफत के नियंत्रण में जो क्षेत्र हैं वहां की जनसंख्या दस और बारह लाख के बीच है। इराक और सीरिया के अतिरिक्त नई खिलाफत के जिहादी पूर्वी लीबिया, सिन्नाई क्षेत्र (मिस्र) और उत्तरी अफ्रीका में भी युद्ध कर रहे हैं। उनका अगला निशाना मध्य पूर्व एशिया, दक्षिणी एशिया और दक्षिण-पूर्वी एशिया के देश हैं।

नई खिलाफत की शुरुआत इराक में 1999 में जमायत अल तौहीद वल जिहाद के रूप में हुई थी। बाद में सीरिया में 2004 में इसका नाम बदलकर 'तंजीम कियादत अल जिहाद फी विलाद अल रफीदान' रख दिया गया। 2003 में इराक पर अमेरिकी हमले के दौरान इस नए संगठन को इराक में अलकायदा का नाम दिया गया। 2006 में इन्होंने मुजाहिद्दीन शुरा काउंसिल का गठन किया। जिसमें इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक अल अनबार और किरकुक आदि 6 अन्य इस्लामी उग्रवादी संगठनों को शामिल किया गया। बाद में जब सीरिया में गृहयुद्ध शुरू हुआ तो इसमें वहां पर सक्रिय इस्लामी उग्रवादी संगठन जैसे अल रका, इदालिब, दिर इज ज़ोर और अलीपो भी शामिल हो गए। अप्रैल 2013 में इन संगठनों ने अलकायदा से अपने सम्बंध विच्छेद कर लिए और एक नए संगठन इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक और लीवेंट की घोषणा कर दी। इसका नया स्वयंभू खलीफा अबू बकर अल बगदादी बना। उसने दावा किया कि वह

इस्लाम का नया खलीफा है और उसका नाम इब्राहिम है। इसके साथ इस नई खिलाफत में सीरिया का एक अन्य इस्लामी उग्रवादी संगठन अल नुसरा भी शामिल हो गया। बगदादी ने 'अमीर उल मोमनीन' (दुनियाभर के मुसलमानों का नेता) की पदवी को धारण किया। बाद में इस नए खलीफा ने यह घोषणा की कि उसकी नई खिलाफत का नाम सुन्नी इस्लामिक स्टेट होगा और उसके तहत इराक, सीरिया, जॉर्डन, इजरायल, फिलिस्तीन, लेबनान, साइप्रस और तुर्की भी शामिल होंगे। अरबी क्षेत्रों में इस नए संगठन का नाम 'दाइश' घोषित किया गया है।

पेरिस में हुए आईएस के हमले के बाद इसके सफाये का अभियान तेज हो गया। गुप्तचर सूत्रों के अनुसार यह संगठन पेट्रोल की अवैद्य बिक्री से हर रोज 14 करोड़ डॉलर कमा रहा है। इसके अतिरिक्त उसने एक हजार करोड़ की कमाई अपहरण और गुलामों की बिक्री से की है। विशेषज्ञों का कहना है कि जब तक आर्थिक रूप से इस संगठन की कमर नहीं तोड़ी जाएगी तब तक इस पर काबू पाना संभव नहीं है। गुप्तचर सूत्रों के अनुसार बगदादी की सेना में लगभग डेढ़ से दो लाख तक लड़ाकू शामिल हैं जिनमें से विदेशी मूल के लड़ाकुओं की संख्या 30 से 35 हजार बताई जाती है। इनमें से 16 हजार अमेरिकी और यूरोपीय देशों के नागरिक हैं। जबकि शेष लोग अरब और एशियाई देशों के हैं। ये सभी लड़ाकू आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्रों से लैश हैं। गुप्तचर एजेंसियां अभी तक निश्चित रूप से यह दावा करने की स्थिति में नहीं हैं कि इस संगठन को किन विदेशी सूत्रों से आधुनिकतम हथियारों की सप्लाई हो रही है।

3 इस्लामिक स्टेट का असली चेहरा

इस्लामिक स्टेट जब से वजूद में आया है उसने पूरे विश्व की नींद हराम कर रखी है। फरवरी 2016 में फिलीपींस में एक मानव बम ने 27 निर्दोषों को एक धमाके से उड़ा दिया। इसके पूर्व उसी महीने में इंडोनेशिया के बाली द्वीप में 247 निर्दोष व्यक्तियों की हत्या इसी खूनी संगठन ने कर दी। बांग्लादेश में एक हिन्दू मंदिर पर हमले में एक पुजारी सहित छह व्यक्तियों की हत्या कर दी गई। अफगानिस्तान में भारतीय दूतावास पर हुए हमले में 36 निर्दोष लोग मारे गए। जबकि पेरिस में इस खूनी संगठन द्वारा 247 निर्दोष लोगों की हत्या की गई। गत दो वर्ष में इस खूनी संगठन ने 45 हजार से अधिक लोगों के खून से होली खेली है। 501 बंधकों के सिर धड़ से अलग करने के खौफनाक वीडियो यूट्यूब पर डाला गया। 20 हजार महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया और उन्हें ईनाम के तौर पर इस खूनी संगठन के जंगजुओं में बांट दिया गया। कहा जाता है कि इनमें से 15 हजार महिलाओं और किशोरियों को सरेआम निलाम करके गुलामों के रूप में बेच दिया गया। 20 हजार से अधिक बच्चे मार डाले गए। 10 से 12 वर्ष की मासूम बच्चों को जबरन सेना में भर्ती करके मौत के मूंह में धकेल दिया गया। सैंकड़ों घायलों को जब वे तड़प रहे थे उस वक्त गोली से उड़ा दिया गया। हजारों वर्ष के प्राचीन सांस्कृतिक धरोहरों को गैर-इस्लामी करार देकर बमों से उड़ा दिया गया। अबू बकर अल बगदादी के कारनामों के कारण हिटलर, हलाकू, चंगेज खां और तैमूर के कत्लेआम की कहानियां पीछे पड़ गई हैं। विश्व के 24 देशों को इस खूनी संगठन ने अपना निशाना बनाया है और 14 हजार से अधिक निर्दोष नागरिकों को जिनमें मर्द, औरतें और बच्चें शामिल हैं, मौत के घाट उतार दिया है। खास बात यह है कि अबू बकर अल बगदादी इन शैतानी हरकतों को जायज ठहराने के लिए कुरान और हदीस का सहारा ले रहा है। उसने दावा किया है कि कुरान में इस बात का स्पष्ट निर्देश है कि गैर-मुसलमानों, काफिरों, शर्कों और मुशरिकों को देखते ही मौत के घाट उतार दिया जाए। उनके मालो-इसबाब को माले गनीम करार देकर फौरन लूट लिया जाए। काफिर औरतों और बच्चों को कत्ल करना और उन्हें गुलाम के रूप में बेचना

आई.एस.आई.एस. द्वारा सामूहिक नरसंहार

इस्लाम के अनुसार सरासर जायज है। अपने इस दावे के सबूत में वह कुरान और हदीस की आयतों का उल्लेख करता है और उसके इस शैतानी दावे का खंडन करने की किसी भी मुस्लिम उलेमा में हिम्मत नहीं है।

प्रेक्षक यह स्वीकार करते हैं कि बगदादी का संगठन फ्रांस, डेनमार्क, कुवैत, कनाडा, अमेरिका, सीरिया, ट्यूनिशिया, अलजीरिया, लीबिया, मिस्र, रूस, तुर्की, अफगानिस्तान, भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, इराक, यमन, सउदी अरब, ऑस्ट्रेलिया, कंबोडिया, फिलीपींस, सोमालिया, केनिया, सूडान आदि अनेक देशों में अपने पैर पसार चुका है। आज कोई भी देश इसके आतंक से खुद को महफूज करने का दावा करने की स्थिति में नहीं हैं। पेरिस हमले ने विश्वभर में अपनी गतिविधियों का विस्तार करने के बारे में अपनी मंशा को स्पष्ट कर दिया है। अकूत संपत्ति, बड़ी संख्या में लड़ाकू और अमानवीय अत्याचारों के लिहाज से इस संगठन ने अन्य आतंकवादी संगठनों को काफी पीछे छोड़ दिया है। इंस्टीट्यूट फॉर इकोनोमिक एंड पीस द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार पिछले साल आईएस ने 11872 लोगों की हत्या की है जबकि दूसरे स्थान पर नाईजीरिया का कुख्यात आतंकवादी संगठन बोको हराम रहा है। जिसके हाथ 8386 लोगों के खून से रंगे हुए हैं। यह संगठन विश्वभर में अपने जंगजुओं को किस तरह से भर्ती करता है इसका उल्लेख अमेरिका के इस्लामी उग्रवाद विशेषज्ञ जे.एम. बर्जर ने अपनी ताजा पुस्तक 'आई.एस.आई.एस. द स्टेट ऑफ टेरर' में किया है। कैलिफोर्निया में गत दिनों निर्दोष लोगों के खून से खेलने वाले पाकिस्तानी मूल की एक जोड़े ने यह दावा किया है कि उसने आईएस के प्रमुख बगदादी से इंटरनेट पर बैयत (वफादारी निभाने की शपथ) ली थी। भारत सरकार ने यह दावा किया है कि उसकी सुरक्षा एजेंसियों ने इस बदनाम संगठन से जुड़े हुए 20 ऑनलाइन वेबसाइट भर्ती करने वाले वेबसाइट को ब्लॉक कर दिया है। मगर अमेरिका के गुप्तचर एजेंसी एफबीआई के अनुसार 40 हजार से अधिक अकाउंट अभी चल रहे हैं। इनमें से 2 हजार ट्विटर अकाउंट सिर्फ ब्रिटेन में हैं। भारत से जिन लोगों को भर्ती किया गया है उन्हें दो से ढ़ाई लाख मासिक वेतन देने का प्रलोभन दिया गया है। जबकि

जो लोग भर्ती कर रहे हैं उन्हें हर महीने 40 से 50 लाख रूपये के रकम का भुगतान किया जाता है। यह धनराशि हवाला से इनलोगों को प्राप्त होती है।

आई.एस.आई.एस. के आतंकी ईराक में प्राचीन मूर्तियों को ध्वस्त करते हुए

विख्यात विश्लेषक तुफैल अहमद के अनुसार बगदादी ने अमेरिकी मूल के गिरफ्तार किए गए फोटो ग्राफर जेम्स फोले को रिहा करने के बदले में यह मांग की थी कि अमेरिका उसके बदले में वहां गिरफ्तार की गई पाकिस्तान मूल की आशिफा सिद्दीकी को रिहा करे। इस्लामिक स्टेट के प्रवक्ता मोहम्मद अल अदानी ने यह दावा किया है कि दुनिया में इस्लामिक खिलाफत की स्थापना की जा चुकी है और उसके खलीफा अबू बकर अल बगदादी उर्फ खलीफा इब्राहिम हैं। हमारा लक्ष्य विश्वभर का इस्लामीकरण है। इसकी शुरुआत उन 48 देशों से की जाएगी जो कभी खिलाफत का अंग रहे हैं। इनमें भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमार और अफगानिस्तान आदि शामिल हैं। अल बगदादी को जब अलकायदा से निष्कासित किया गया तो उसने दुनिया भर के इस्लामी संगठनों के साथ संपर्क स्थापित किया और इस वक्त उसे 52 इस्लामी जिहादी संगठनों का सहयोग प्राप्त है। उन्होंने उसे अपने नेता के रूप में मान्यता दी है। उन्होंने यह दावा किया है कि उसे पाकिस्तान के जिहादी संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान, तहरीक-ए-खिलाफत व जिहाद का समर्थन प्राप्त है। इन संगठनों ने इस नए खलीफा के हाथ पर बैयत ली है। इसके बाद इस्लामी शरा के अनुसार यह अनिवार्य हो गया है कि खलीफा का हर हुक्म माना जाए। जो व्यक्ति खलीफा का हुक्म नहीं मानेगा उसे इस्लामी शरा के अनुसार कत्ल किया जाना चाहिए। इस्लामिक जगत का एक अन्य मुख्य संगठन अंसार अल दवा अल इस्लामिया है उसने भी बगदादी को अपना खलीफा स्वीकार किया है। हाल में ही सीरिया में मारे गए एक पाकिस्तानी मूल के व्यक्ति शिराज

तारिक अबु मुशा के नाम पर एक विश्व में नया इस्लामी संगठन स्थापित किया गया है जो कि बगदादी के लिए मुस्लिम युवकों को जिहाद का प्रशिक्षण देता है। तहरीक तालिबान पाकिस्तान के प्रवक्ता मुजाहिद हबीबुल्लाह हबीब ने एक फतवा जारी किया है कि उनके संगठन के सारे जंगजु और खजाना वे नई खिलाफत के कदमों पर लूटा देंगे।

अफगानिस्तान में एक दर्जन से अधिक गुप्त प्रशिक्षण शिविर अब्दुर्रशीद गाजी के नेतृत्व में स्थापित किए गए हैं। इनका संचालन एक अन्य उग्रवादी संगठन लश्करे झांग्वी द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने यह भी दावा किया है कि भारत में भी नई खिलाफत का समर्थन बढ़ रहा है। लखनऊ के दारूल उलूम नदवा के एक अध्यापक सुलेमान नदवी ने खुलेआम उसका समर्थन किया है। यह अलग बात है कि बाद में हिन्दुस्तानी मुस्लिमों के नेताओं ने इस मामले को दबा दिया। कश्मीर में खुलेआम इस उग्रवादी संगठन की एक शाखा श्रीनगर में स्थापित की जा चुकी है। इसका प्रमुख आदिल फियाज है जिसने ऑस्ट्रेलिया के क्वीनलैंड विश्वविद्यालय से एमबीए की डिग्री प्राप्त की है और उसने सीरिया में जिहाद का प्रशिक्षण भी लिया है। तमिलनाडु में खुलेआम युवक आईएस के टी-शर्ट पहनकर अबू बकर अल बगदादी के समर्थन में नारे लगाते हैं। महाराष्ट्र में इस संगठन के लिए अब तक सौ से अधिक लोग भर्ती किए जा चुके हैं। मालदीव में अली जलील को फिदाईन का प्रमुख बनाया गया है। बताया जाता है कि उसने 2009 में रावलपिंडी में पाकिस्तानी गुप्तचर एजेंसी आईएसआई के मुख्यालय पर मानव बम के रूप में हमला किया था। उसके साथ सीरिया का एक अन्य जिहादी अबु तुराब भी शामिल था जिसे पाकिस्तानियों ने मौके पर जिंदा गिरफ्तार कर लिया था। सिंगापुर में हाल में ही एक व्यक्ति गुल मोहम्मद को गिरफ्तार किया गया है जो कि इस संगठन के लिए जिहादी भर्ती किया करता था। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों ने तमिलनाडु के तट पर भारत में अवैध रूप से प्रवेश करने का प्रयास करते हुए उस्मान अली को गिरफ्तार किया है जो कि सीरिया में प्रशिक्षण देने के बाद भारत में बगदादी के संगठन को स्थापित करने के लिए भेजा गया था। इंडोनेशिया और फिलीपींस में एक नया संगठन जामा अल अंसार अल खलीफा स्थापित किया गया है जो कि वहां से आतंकवादियों की भर्ती कर रहा है।

4 इस्लामी देशों में मतभेद

नई खिलाफत का सबसे ज्यादा विरोध मुस्लिम देशों द्वारा ही किया जा रहा है क्योंकि खलीफा बगदादी न तो शियाओं को स्वीकार करने के लिए तैयार है और न ही वह सुन्नियों को रियायत देने की मूड में है। शियाओं के अधिकांश धार्मिक स्थल इराक और सीरिया में हैं जिन्हें बगदादी ने नेस्तनाबूद करने की घोषणा की है। बताया जाता है कि बगदादी सैंकड़ों वर्ष पूराने शिया इमामों के मजारों और अन्य उपासना स्थलों को ध्वस्त कर चुका है। सउदी अरब के सुन्नी शासकों को उसने अपना निशाना बनाना शुरू किया है। हाल के एक वीडियो में उसने यह घोषणा की है कि मक्का मदीना के पवित्र नगरों पर जिन वहाबी शासकों ने कब्जा कर रखा है वे मुस्लिम नहीं है बल्कि सर्क हैं। इसलिए उनके कब्जे से काबा और मदीना को मुक्त करवाना बेहद जरूरी है। उसने कहा है कि इस्लाम के जिहादियों का सबसे प्रमुख कार्य यह है कि इन दोनों पवित्र नगरों को इस्लाम के दुश्मनों से आजाद करवाया जाए। सउदी अरब के मुफ्ती आजम ने यह घोषणा की है कि बगदादी खारजी है इसलिए उसका खात्मा करना हर मुसलमान का कर्तव्य है।

ज्ञातव्य है कि सातवीं शताब्दी में जब हजरत अली इस्लाम के चौथे खलीफा बने तो उनके खिलाफ कुछ अतिवादी मुस्लिमों ने जिहाद का झंडा बुलंद किया था। वे खुद को मुस्लिम और अन्य सभी लोगों को काफिर और सर्क मानते थे। उनकी नजर में उनको छोड़कर हर व्यक्ति इस्लाम की दृष्टि से 'काबिले कत्ल' (कत्ल करने योग्य) है।

सउदी अरब में जब से खलीफा बगदादी के लड़काओं ने हिंसक कार्रवाईयां शुरू की हैं तब से आई.एस. सउदी शासकों के लिए सिरदर्द बनी हुई है। सउदी सरकार आई.एस. और उससे जुड़े हुए 25 संगठनों को गैरकानूनी घोषित कर चुकी है। इन संगठनों से संपर्क रखने के आरोप में 5 हजार से अधिक लोग गिरफ्तार किए जा चुके हैं। गत दो वर्षों में बगदादी के जिहादियों ने दो हजार से अधिक सउदी अरब के नागरिकों की निर्मम हत्या की है।

सउदी अरब और ईरान भले ही एक-दूसरे के खिलाफ हों मगर दोनों की नींद बगदादी ने हराम कर रखी है। ईरान ने भी बगदादी और उसके संगठन पर प्रतिबंध लगा दिया है। ईरान में बगदादी के गुर्गों के हमलों में 550 से अधिक निर्दोष लोग मारे गए हैं। यही कारण है कि ईरान ने अपनी फौज 'पाशबाने इंकलाब' के नाम पर इराक और सीरिया में भेजे हुए हैं जो कि बगदादी की सेना का मुकाबला कर रहे हैं। हाल ही में ईरान की वायुसेना ने इराक में बगदादी के अड्डों पर भीषण बमबारी भी की है। बगदादी का सामना करने के लिए ईरान ने हाल में ही ब्रिटेन से बम वर्षक जहाज भी खरीदे हैं।

पेरिस पर हमले के बाद फ्रांस ने यूरोपीय देशों और अमेरिका पर इस बात के लिए दबाव डाला था कि खलीफा अल बगदादी का सफाया करने के लिए संयुक्त सैनिक कार्रवाई की जाए। इसके बाद सउदी अरब के नेतृत्व में 34 देशों की संयुक्त सैनिक कमान बनाई गई है। खास बात यह है कि इस कमान में ईरान, सीरिया और इराक के शिया बहुल देशों को शामिल नहीं किया गया है। शुरू में अमेरिका ने यह घोषणा की थी कि वह इस युद्ध में सीधे भाग लेगा। मगर जब बाद में अमेरिकी मीडिया और राजनीतिक जगत ने अमेरिकी सरकार पर दबाव डाला कि वह इस युद्ध में न उलझे वरना उसकी हालत वियतनाम और अफगानिस्तान जैसी हो जाएगी और इस मकड़जाल से निकल पाना उसके लिए संभव नहीं होगा। इसके बाद पेंटागन ने घोषणा की कि वह युद्ध में सीधे तौर पर हिस्सा नहीं लेगा। मगर वह अन्य देशों की सलाह देने और युद्ध की रणनीति तय करने के लिए अपने 15 हजार विशेषज्ञों को सउदी अरब में स्थापित केन्द्रीय कमान के पास रखेगा।

सउदी अरब और ईरान दोनों ही नई खिलाफत का विरोध कर रहे हैं ऐसे में भारत के मुसलमान भी इस नए आतंकवादी संगठन का खुलेआम समर्थन करने से परहेज कर रहे हैं। भारत के विभिन्न मुस्लिम संगठनों द्वारा आतंकवाद के विरोध के नाम पर जो सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं उनके पीछे सउदी अरब और ईरान दोनों का हाथ है। इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि सउदी अरब के तार वहाबियों, अहिले हदीस और देवबंदियों से सीधे जुड़े हुए हैं। गत दिनों बरेलवी सम्प्रदाय और सूफी संगठन के अध्यक्ष मौलाना मोहम्मद अशरफ कच्छोछवी ने भारत सरकार से यह मांग की थी कि सउदी अरब और उसकी वहाबी विचारधारा से जुड़े हुए भारतीय संगठनों पर लगाम लगाई जाए। उनका यह भी कहना था कि सउदी अरब से अरबों पेट्रो डॉलर भारत में आतंकवाद की ज्वाला को भड़काने के लिए इन संगठनों को प्राप्त होते हैं। यह जगजाहिर है कि देवबंदियों और वहाबी सम्प्रदाय के साथ कांग्रेस के शुरू से नजदीकी रिश्ते रहे हैं। इन रिश्तों की शुरुआत महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए खिलाफत आंदोलन के

दिनों से हुई थी। यही कारण है कि कांग्रेस को मुस्लिम वोट डलवाने में देवबंदियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह उल्लेख करना भी जरूरी है कि इस देश के सभी शीर्ष इस्लामी धार्मिक संगठनों पर वहाबियों और देवबंदियों का कब्जा है। इन मदरसों से शिक्षा प्राप्त इमाम और मुफ्ती देश भर की लाखों मस्जिदों में कार्यरत हैं और वे हर चुनाव में मुसलमानों के वोट कांग्रेस की झोली में डलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। यही कारण है कि कांग्रेस समर्थक जमीयते उलेमा के अध्यक्ष अरशद मदनी ने खुलेआम देश के मुसलमानों से अपील की है कि वे अबू बकर अल बगदादी के बहकावे में न आएं क्योंकि वह अमेरिका का दलाल है। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इतेहादुल मुस्लिमीन के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी भी यही राग अलाप रहे हैं। उनका कहना है कि अबू बकर अल बगदादी और उसका संगठन इस्लाम विरोधी है इसलिए भारतीय मुसलमानों को उसके जाल में नहीं फंसना चाहिए। ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट के अध्यक्ष बदरूद्दीन अजमल ने भी अबू बकर अल बगदादी और उसके संगठन को इस्लाम के नाम पर कलंक बताया है। उनका कहना है कि अबू बकर अल बगदादी के इशारे पर जिस तरह से निर्दोष लोगों की हत्या की जा रही है, बच्चों का खून बहाया जा रहा है और महिलाओं से सामूहिक बलात्कार करने के बाद उन्हें गुलाम बनाकर बेचा जा रहा है उससे विश्वभर में मुसलमानों का मूंह काला हो रहा है। मुसलमान और इस्लाम घृणा के पात्र बनते जा रहे हैं।

सबसे दिलचस्प बात यह है कि अधिकांश भारतीय मुस्लिम नेता अबू बकर अल बगदादी और उसके संगठन की खुलेआम निंदा करने के लिए तैयार नहीं हैं। वे इस संगठन को दोषी करार देने की बजाय यह कुतर्क दे रहे हैं कि इस संगठन का संचालन अमेरिका और इजरायल द्वारा किया जा रहा है। लखनऊ के मुस्लिम उलेमा खालिद रशीद फिरंगी महली का दावा है कि अमेरिका ने इस्लाम को बदनाम करने और मुसलमानों को विभाजित करने के लिए इस संगठन की रचना की है। इस संगठन के जो तथाकथित जंगजू जिहाद कर रहे हैं वे इजरायल के नियमित सैनिक हैं। हाल में ही ऐसे कुछ इजरायली सैनिक इराक में पकड़े भी गए थे।

देश के एक प्रमुख मुस्लिम पत्रकार शाहिद सिद्दीकी का दावा है कि आई.एस. और अलकायदा के बीच वर्चस्व की जंग होगी और इससे मुसलमानों को दूर रहना चाहिए। गत वर्ष अलकायदा ने अल बगदादी से संबंध विच्छेद करने की सार्वजनिक रूप से घोषणा की थी। अलकायदा और ओसामा बिन लादेन ने मुस्लिम देशों में समानांतर शासन और सरकारें बनाने का कभी कोई प्रयास नहीं किया। जबकि बगदादी का लक्ष्य सभी मुस्लिम देशों के सरकारों का तख्ता पलट कर उनके शासन पर कब्जा करने का है। उसने

खुलेआम यह घोषणा की है कि उसके जिहादी पवित्र काबा और मदीना पर कब्जा करके दम लेंगे। यही कारण है कि विश्व के मुस्लिम शासक उसके खिलाफ एकजुट होने का प्रयास कर रहे हैं। सिद्दीकी ने यह भी दावा कि शिया और सुन्नियों को आपस में लड़वाने के लिए इजरायल और यहूदियों ने अबू बकर अल बगदादी को मैदान में उतारा है। नए स्वयंभु खलीफा बगदादी ने यह दावा किया है कि नई खिलाफत का विस्तार स्पेन से लेकर इंडोनेशिया तक किया जाएगा। उसने यह भी कहा है कि इस्लाम विभिन्न देशों की राष्ट्रीय सीमाओं को नहीं मानता हमारे लिए सारी दुनिया मुसलमानों का वतन है और मुस्लिम उमा एक हैं। उसके इस दावे से मुस्लिम देशों के साथ -साथ ईसाई देश भी भयभीत हैं। जिस तरह से यूरोप, अमेरिका, एशिया और अफ्रीका के देशों के युवा बगदादी की ओर आकर्षित हो रहे हैं वह खतरनाक और गंभीर संकेत है। हर देश यह महसूस करता है कि बगदादी के जिहादी उसके लिए कभी भी मुसीबत बन सकते हैं। इसलिए मुस्लिम देश हों या ईसाई सभी इस स्वयंभू खलीफा का सफाया करना चाहते हैं। ऑस्ट्रेलिया और अमेरिकी सरकार ने अपने युवा वर्ग को बगदादी के जाल में फंसने से बचाने के लिए दस अरब डॉलर की नई रणनीति तैयार की है।

उर्दू अखबार अजीजुलहिन्द (24 जुलाई, 2014) के अनुसार तुर्की के धार्मिक मामलों के प्रमुख मोहम्मद गौर मीर ने कहा है कि इराक और सीरिया में जिस नई खिलाफत का ऐलान किया गया है वह इस्लामी शरिया के खिलाफ है और इसे मुस्लिमों को स्वीकार नहीं करना चाहिए। गौर मीर ने कहा है कि तुर्की में उस्मानी खिलाफत के खात्मे के बाद विश्व में अनेक लोगों ने खलीफा होने का दावा किया। मगर ये सब दावे सिर्फ धोखा थे। इस्लामी शरिया के अनुसार ये दावे बेबुनियाद थे। खिलाफत का दावा करने वाले किसी भी व्यक्ति को खलीफा के रूप में आलम-ए-इस्लाम ने कभी मान्यता नहीं दी। उन्होंने कहा कि नई खिलाफत द्वारा ईसाईयों को खत्म करने के बारे में जो धमकियां दी जा रही हैं वह इस्लाम के सिद्धांतों के सरासर खिलाफ है। उन्होंने कहा कि पश्चिमी देशों की नजर में खिलाफत पोप की भांति एक धार्मिक सत्ता है। जबकि इस्लाम के अनुसार खलीफा एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके पास धर्म के साथ-साथ शासन के अधिकार भी है और जो शरिया के अनुसार इन अधिकारों को लागू करता है। उनका यह भी कहना है कि अब विभिन्न देशों के मुसलमान शासक एक खलीफा के नियंत्रण में नहीं रह सकते। मगर वे यूरोपियन यूनियन की तरह एक राजनीति ब्लॉक जरूर बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि हर रोज हजारों मुस्लिम अपने ही भाइयों के हाथों मारे जाते हैं। इस प्रवृत्ति को रोकने की जरूरत है।

5 खिलाफत का इतिहास

खलीफा का शाब्दिक अर्थ है इस्लाम के प्रवर्तक हजरत मोहम्मद का प्रतिनिधि या उत्तराधिकारी। शियाओं का दावा है कि पैगम्बर ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपने दामाद हजरत अली को अपना उत्तराधिकारी बनाने की वसीयत की थी। इसकी पुष्टि मुस्लिम पत्रकार एम.जे. अकबर ने भी की है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'स्वोर्ड ऑफ इस्लाम' में यह दावा किया है कि पैगम्बर ने हजरत अली को अपना खलीफा नियुक्त करने की वसीयत की थी। मगर पैगम्बर की चहेती पत्नी हजरत आईशा ने धांधली करके अपने पिता अबू बकर को खलीफा बना दिया। इस पर मुसलमान चार गुटों में विभाजित हो गए। अबू बकर के निधन के बाद उमर और उस्मान खलीफा बने मगर दोनों की निर्मम हत्या उन्हीं के अनुयायियों ने कर दी। जब हजरत अली खलीफा बने तो उनका विरोध मोहम्मद की विधवा आईशा और मुआविया ने संयुक्त रूप से किया। मगर युद्ध में दोनों को मुंहकी खानी पड़ी। अली की हत्या कुफा में उस समय की गई जब वे कुरान पढ़ रहे थे। पैगम्बर के पूरे वंश का नामोंनिशान कर्बला के मैदान में मुआविया के पुत्र यादीद ने कर दी और मुआविया नया खलीफा बन गया। इसके बाद जो भी खलीफा बना उसकी हत्या की जाती रही। अमीर मुआविया के खलीफा बनने के बाद 'उमय्या' वंश के खिलाफत की शुरुआत हुई। इस खलीफा के शासनकाल में मुस्लिम साम्राज्य अफ्रीका तक पहुंच गया। मुस्लिम साम्राज्य बड़ी तेजी से फैला। अरब सैनिक जहां भी गए वहां पर उन्होंने न सिर्फ लूटपाट की बल्कि औरतों से सामूहिक बलात्कार भी किया। जिनलोगों ने इस्लाम कबूल करने से इनकार कर दिया उनकी निर्मम हत्या कर दी गई।

खिलाफत बनी उमय्या 661 ई. से 750 ई. तक रही। हिशाम का उत्तराधिकारी वलीद बिन यजीद जो वलीद द्वितीय कहलाता है, एक अयोग्य और ऐयाश शासक था। उसके शासनकाल में अरबों के विभिन्न कबीलों में मतभेद बढ़े। जब उसकी हत्या करने के लिए लोग उसके महल में दाखिल हुए तो वह अपनी

जान बचाने के लिए कुरान खोलकर पढ़ने लगा। मगर इसके बावजूद उसकी हत्या कर दी गई। इसके बाद छह खलिफाओं का शासनकाल बहुत अल्प है। क्योंकि उनकी विरोधियों द्वारा निरंतर हत्या की जाती रही। अरब दो गिरोहों में बंट गए। इनमें एक यमनी और दूसरा मिस्री था। दोनों एक दूसरे को कत्ल करते रहे। मोहम्मद के एक वंशज बनी हाशिम ने उमय्या वंश के खिलाफ इसलिए विद्रोह किया क्योंकि वह स्वयं को पैगम्बर का वंशज होने के कारण खिलाफत का असली वारिस समझता था। बाद में बनी हाशिम में भी दो गिरोह पैदा हो गए। एक वह जो हजरत अली और उसकी औलाद को खिलाफत का हकदार समझता था। बाद में इसी गिरोह में से कुछ लोगों ने शिया फिरका (सम्प्रदाय) का रूप ले लिया और वे 'असना-अशरी' कहलाए। दूसरा गिरोह हजरत मोहम्मद के चाचा हजरत अब्बास के वंशजों को खिलाफत दिलाना चाहता था। इन दोनों की जंग का फायदा अब्बासी वंश ने उठाया। इस अवधि में इस वंश के 12 खलीफा हुए। पैगम्बर-ए-इस्लाम की दसवीं पत्नी हजरत आईशा की हत्या अमीर मुआविया के इशारे पर की गई। इसके बाद हर उस व्यक्ति की हत्या की गई, जिसने उमय्या वंश से खलीफाओं के खिलाफ आवाज उठने की हिम्मत की। यह हत्याकाण्ड तीन दिन तक जारी रहा। कई हजार बेगुनाह मार डाले गए। सिंध को जीतने का मुसलमानों ने तीन बार प्रयास किया था मगर उन्हें हर बार मुंह की खानी पड़ी। चौथी बार बसरा के हाकिम हजाज ने अपने दामाद 17 वर्षीय मोहम्मद बिन कासिम को सिंध की राजधानी ब्रह्मबाद हमला करने के लिए भेजा। सिंध के शासक दाहिर के कुछ साथियों ने गद्दारी की और वे आक्रमणकारी मुसलमानों के साथ मिल गए। युद्ध में मोहम्मद बिन कासिम की विजय हुई और सिंध मुसलमानों के साम्राज्य में शामिल हो गया। इस वंश के यदि कुछ खलीफाओं को छोड़ दिया जाए तो अधिकांश खलीफा ऐशपरस्त थे। उन्होंने शराब और संगीत को प्रोत्साहन दिया। इनके शासनकाल में मुसलमानों में मतभेद तेजी से बढ़े हैं। मगर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इस्लाम का शासन चीन, भारत, अफ्रीका और यूरोप के अनेक देशों तक फैल गया। लेकिन इसी दौरान मुसलमानों में दर्जनों नए सम्प्रदाय पैदा हो गए। इस वंश के हाथ क्योंकि हजरत अली की औलाद के खून से रंगे हुए थे इसीलिए खार्जी, शिया, इस्माइलियों, हाशिमों, अलमीयों ने इस वंश के खात्मे के लिए सक्रिय भाग लिया। मुसलमानों के मतभेदों का लाभ उठाकर अब्बासी वंश ने खिलाफत पर कब्जा कर लिया। अब्दुल्ला बिन मोहम्मद पहला अब्बासी खलीफा था। खिलाफत का पद सम्भालते ही उसने बन्नी उमय्या के अधिकांश मर्दों को कत्ल करवा दिया। इस नए खलीफा ने इराक के शहर अनबार को अपनी

राजधानी बनाया। मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार इस खलीफा ने गद्दी पाने के लिए 6 लाख लोगों की हत्या की थी। दमिश्क फतह करके अब्बासी फौजों ने वहां के किसी मर्द, औरत और बच्चे को नहीं बख्शा। शहर को लूटने के बाद इस नगर के रहने वाले सभी नागरिकों को या तो कत्ल कर दिया गया या फिर उन्हें जीवित जला दिया गया। हजरत अमीर मुआविया सहित सभी उमवी की कब्रें खोद डालीं गईं। मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार उमवी वंश के बच्चों को चुन-चुनकर उनकी हत्या की गई और शवों पर दस्तरख्वान बिछाकर खाना खाया गया। यही कारण है कि इतिहासकारों ने इस खलीफा को 'सफाह' (खून बहाने वाला) का नाम दिया गया। अब्बासी खलीफा 785 ई. से लेकर 1258 ई. तक सत्ता में रहे। इस काल में कुल 21 खलीफा हुए। इनमें अधिकांश को कत्ल किया गया।

जमाते-इस्लामी के प्रमुख सैयद अबू अल अली मदूदी ने अपनी पुस्तक 'खिलाफत व मुलकीयत' में कहा है कि अब्बासी फौजों ने दमिश्क को विजय करके 50 हजार मुसलमानों की वहां हत्या की। जामिया बिन उमय्या मस्जिद को घोड़ों का अस्तबल बना दिया गया। अब्बासी वंश के पहले खलीफा के खिलाफ जब मोहसिल में विद्रोह हुआ तो उसने अपने भाई यय्यीया को इस विद्रोह को कुचलने के लिए वहां भेजा। यय्यीया ने घोषणा की कि जो व्यक्ति मस्जिद में शरण लेगा उसे जीवनदान दिया जाएगा। मगर जिन 20 हजार लोागें ने इस मस्जिद में शरण ली थी उन सभी की निर्मम हत्या कर दी गई। कई हजार औरतों से बलात्कार किया गया। विख्यात शिया लेखक मोहम्मद अली तिबाबा का कथन है कि अब्बासी शासनकाल फरेब और बेकाई पर आधारित था। खलीफा मंसूर ने इस्लाम के सबसे बड़े विद्वान इमाम आजम अबू हनीफा को कैद कर दिया और इसके बाद उन पर भीषण अत्याचार किया गया। जिससे उनकी मौत हो गई। इसी खलीफा ने अब्बन जिलान और इमाम अब्दल हमीद बिन जाफर को भी जेल में डाल दिया गया और वहीं उनकी मौत हुई। अबू मुस्लिम खुरासानी, जिसके कारण अब्बासी खिलाफत स्थापित हुई थी, को धोखा देकर खलीफा ने अपनी राजधानी में बुलाया और जब वह खलीफा के साथ खाना खा रहा था, तो उसकी हत्या करवा दी गई। मोहम्मद अली तिबाबा ने अपनी पुस्तक 'अल तहरी' में कहा है कि अबू मुस्लिम ऐसा व्यक्ति था जिसने अब्बासियों की खिलाफत को स्थापित करने के लिए यमन, अरब, इराक, ईरान में डेढ़ लाख से अधिक मुस्लिमों व गैर-मुस्लिमों की हत्या की थी। मगर खलीफा ने अपने इस सहयोगी को भी नहीं बख्शा। खलीफा अल मेहदी इब्न मंसूर

के बारे में मुस्लिम इतिहासकार बसार ने लिखा है कि वह अंधाधुंध शराब पिया करता था और उसके हरम (रनिवास) में सात हजार औरते थीं। खलीफा अन्धविश्वासी था और उसने इस्लाम के नियमों की धज्जियां उड़ाते हुए संगीत को प्रोत्साहन दिया। अरब इतिहासकारों के अनुसार उसकी हत्या उसकी मां खेजरान ने करवाई थी। मुस्लिम इतिहासकार हारून रशीद खलीफा को महिमामंडित करते हैं। मगर इब्राहिम इब्न मेंहदी नामक मुस्लिम इतिहासकार के अनुसार हारून रशीद ने अपने सगे भाई अल आमीन की हत्या करवाई थी। एक अन्य लेखक इब्बन जरेरी अल बसरी के अनुसार खलीफा को हिजड़ों से बहुत दिलचस्पी थी और उसने सैकड़ों खूबसूरत हिजड़ों को खरीदकर अपने महल में रखा हुआ था। उनसे उसके शारीरिक संबंध थे।

मुस्लिम इतिहासकार खलीफा मामून रशीद को सबसे श्रेष्ठ शासक बताते हैं। मगर जब 'फितन-ए-खल्के-कुरआन' के प्रश्न पर उस समय के सबसे बड़े इस्लामी विद्वान इमाम अहमद बिन जुबली ने खलीफा का विरोध किया तो उसकी सरेआम हत्या करवा दी गई। सैंकड़ों मुस्लिम विद्वानों को खलीफा के आदेश से जीवित जला दिया गया। इसके बाद जो भी खलीफा बना उसकी हत्या होती रही। शायद ही कोई खलीफा स्वाभाविक मौत मरा हो। अब्दुर्रहमान नामक एक व्यक्ति ने स्पेन पर कब्जा कर लिया और वहां एक नया शासक वंश चलाया जो कि 800 साल तक सत्ता में रहा। इस वंश ने खलीफा होने का दावा किया था। मगर उनका यह दावा अरबों और तुर्कों ने कभी स्वीकार नहीं किया।

ब्रिटिश इतिहासकार सर थॉमस डब्ल्यू. अर्नोल्ड ने अपनी पुस्तक 'द खिलाफत' में इस बात पर जोर दिया है कि बगदाद के अन्तिम खलीफा तुर्क शासकों के हाथ में कठपुतली थे। सन् 1928 में इन शासकों ने खलीफा मुकतदीर की हत्या करवा दी और उसकी जगह उसके भाई काहिर को उत्तराधिकारी बनाया। दो वर्ष बाद ही उसकी आंखें निकलवा दी गई और उसे जेल में डाल दिया गया। उसकी जगह उसके भतीजे रादी को खलीफा बनाया गया। काहिर पेट भरने के लिए मस्जिदों में भीख मांगा करता था। बगदाद के तुर्क शासक जिसे चाहते थे खलीफा बना देते थे और जिसे चाहते थे खिलाफत के पद से हटाकर उसकी हत्या कर देते थे। खलीफा मुकतदीर को अपनी जान बचाकर बगदाद से भागना पड़ा। उसने विभिन्न मुस्लिम शासकों से शरण मांगी मगर उसे किसी ने शरण नहीं दी। अन्त में वह तुर्की

सेनापति तुजून की शरण में आया। तुजून के आदेश से उसकी आंखें निकाल ली गई और उसे खिलाफत के पद से हटा दिया। एक अन्य कठपुतली मुस्तफाकी को खलीफा बनाया गया। ईरान से आए हुकूमत बनी बुवया के एक शासक मुअज्जद्दौला ने 945 ई. में बगदाद पर कब्जा कर लिया। खिलाफत अब भी कायम रही क्योंकि मुसलमान खिलाफत को इस्लामी राजनीति व्यवस्था का अनिवार्य हिस्सा समझते थे। एक खलीफा के बाद दूसरा खलीफा तख्त पर बैठता रहा मगर इन खलीफाओं को कोई अधिकार प्राप्त नहीं था क्योंकि शासन दूसरों का था। यह स्थिति सौ वर्ष तक रही। इसके बाद खलीफा फिर आजाद हो गए मगर उनकी हुकूमत सिर्फ इराक तक सीमित रही। दस कठपुतली खलीफा जहर देकर मार दिए गए।

सर अर्नोल्ड के अनुसार खलीफा के हाथ में भले ही शासन की बागडोर नहीं थी मगर इसके बावजूद इस्लामी जगत में उसकी एक महत्वपूर्ण हैसियत थी। इस्लामी जगत में जो भी नया सुल्तान बनता वह अपनी स्थिति को उम्मा में मजबूत करने के लिए खलीफा से फरमान जरूर प्राप्त करता। उदाहरण के रूप में भारत में गुलाम वंश की स्थापना हो चुकी थी। मगर अल्तमश ने एक विशेष प्रतिनिधिमंडल बगदाद भेजा और खलीफा से अपने पद की पुष्टि करवाने के लिए उसे भारी धनराशि नजराने के रूप में दी। इसी तरह से अलाउदीन खिलजी ने भी सुल्तान होने की पुष्टि के लिए बगदाद के खलीफा को भारी रकम नजराने के रूप में पेश की। खास बात यह है कि दिल्ली के इन दोनों सुल्तानों ने अपने नाम के जो सिक्के जारी किए उन पर खलीफा मुस्त हजर का नाम अंकित था। मंगोलो ने इस खलीफा की हत्या कर दी मगर दिल्ली के सुल्तान उसके मरने के बाद भी सौ वर्ष तक उसी के नाम पर हिन्दुस्तान में सिक्के चलाते रहे।

इससे भी रोचक बात यह है कि 1340 ई. में दिल्ली के सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक ने बगदाद के खलीफा मुश्ताकफी से हिन्दुस्तान के सुल्तान के रूप में खिल्लत प्राप्त की। उसने अपने सिक्कों पर खलीफा मुश्ताकफी का नाम लिखना शुरू किया। यह खलीफा तो मर गया मगर तुगलक वंश के समाप्त होने तक भारत भर में इसे खलीफा के नाम पर सिक्के चलते रहे। इससे साफ है कि मुस्लिम सुल्तान अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए खलीफा का सहारा लिया करते थे।

इसी ब्रिटिश लेखक ने अपनी पुस्तक में इस बात पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है कि खलीफा की पदवी का लाभ उठाने के लिए कई मुस्लिम शासकों ने भी मनमाने ढंगे से खुद को खलीफा लिखना शुरू कर दिया। हालांकि उनका खिलाफत से कोई सम्बन्ध नहीं था। ऐसे इस्लामी शासकों के दबाव के कारण इस्लाम के चिन्तक अल बकलानी ने यह घोषणा की कि मुसलमानों के खलीफा का कुरैश कबीला से सम्बन्ध होना जरूरी नहीं है। तैमूर के पोते खलील सुल्तान स्वंयभू खलीफा बन गया और उसने अपने नाम के साथ अमीर अल मुसलमीन लिखना शुरू किया। उसी का अनुसरण उसके चाचा और समरकन्द के शासक शाहरूख ने भी किया। ट्यूनिशिया में आसिद वंश के शासकों ने भी खलीफा होने का दावा शुरू किया। रोचक बात तो यह है कि 1332 ई. में जल जल्लार वंश के शासकों ने बगदाद पर कब्जा करने के बाद अपने नाम के साथ अमीन उलमोमनीन और जिल्ले इलाही लिखना शुरू किया। मगर उनका शासन 1417 ई. में हूजून हुसैन ने खत्म कर दिया। सर आर्नल्ड ने ऐसे एक दर्जन अन्य मुस्लिम शासकों का उदाहरण इस सन्दर्भ में दिया है।

मुस्लिम इतिहासकार मौलाना अकबर शाह नजीबाबादी का दावा है कि अंतिम अब्बासी खलीफा के शासनकाल में उसके अत्याचारों से तंग आकर उसके शिया वजीर ने मंगोल सम्राट हलाकू खान को बगदाद पर हमला करने की दावत दी। इस हमले में एक करोड़ छह लाख लोग मारे गए। खरबों रूपये का खजाना जो खलीफाओं ने अनेक देशों को लूटकर इक्ट्ठा किया था उसे भी ततारी लूट कर ले गए। खलीफा को एक खम्भे से बांध दिया गया और लात-घूसों से मारकर उसकी हत्या कर दी गई। इसके बाद तुर्कों ने बगदाद पर हमला किया और अंतिम खलीफा की हत्या करके खुद खलीफा बन गए। उन्होंने अपना मुख्यालय मिस्र के काहिरा में स्थापित किया। 1516 ई. में तुर्की के सुल्तान सलीम ने मिस्र पर हमला किया और अंतिम सुल्तान तामिन बेग को गिरफ्तार करके उसकी हत्या कर दी और खलीफा मोहम्मद के नाम से वह स्वयं खलीफा बन गया। इस वंश में कुल 18 खलीफा हुए।

अंतिम खलीफा अब्दुल हमीद द्वितीय था जिसे 1923 में तुर्की के राष्ट्रपति कमाल अतातुर्क ने पश्चिमी देशों के दबाव पर खिलाफत के पद से हटा दिया। मार्च 1924 में तुर्की की राष्ट्रीय एसेंबली ने एक

प्रस्ताव पारित करके खिलाफत के पद को सदा के लिए समाप्त कर दिया और अंतिम खलीफा को तुर्की से भागकर फ्रांस में शरण लेनी पड़ी।

मुस्लिम विद्वान अब्दुल कादिम जलूम ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'खिलाफत कैसे तबाह हुई' में यह सनसनीखेज आरोप लगाया है कि खिलाफत तबाह करने में ईसाई समुदाय का सबसे बड़ा हाथ था, जो यह समझते थे कि जबतक खिलाफत रहेगी वे मुसलमानों को ईसाई धार्म में दीक्षित नहीं कर सकेंगे। इसलिए ब्रिटेन आदि यूरोप के ईसाई देशों ने एक तुर्कीवासी कमाल अतातुर्क से गठजोड़ किया। अतातुर्क ने ईसाईयों की कठपुतली बनकर खिलाफत का नामोनिशान मिटाने में विशेष भूमिका निभाई। तुर्की के मुसलमान उलेमा को जबरन पश्चिमी वेश-भूषा अपनाने पर विवश किया। जो मुसलमान दाढ़ी रखता था या अरबी लिबास पहनता था उसकी हत्या करवा दी जाती थी या फिर उसे जेल में डाल दिया जाता था। तुर्की भाषा की लिपि तुर्की से बदलकर रोमन कर दी गई। देशभर में इस्लामी शिक्षा देने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। तुर्की को सेकुलर देश घोषित किया गया। मस्जिदों में नमाज पर भी प्रतिबन्ध लगाया गया। उस्मानिया सल्तनत के ब्रिटेन, जर्मनी, ग्रीस और रूस ने मिलकर टुकड़े-टुकड़े करके उन पर अपना कब्जा जमा लिया।

इसके बाद भी विभिन्न देशों के शासक खलीफा होने का दावा करते रहे हैं। मगर उन्हें मुस्लिम जगत ने कभी मान्यता प्रदान नहीं की। उनका प्रभाव क्षेत्र अपने-अपने देश तक ही सीमित रहा। आज भी मलेशिया के सात राज्यों के शासक सुल्तान अपने नाम के साथ खलीफा शब्द का इस्तेमाल करते हैं। भारत में कादियानियों ने अंग्रेजों के इशारे पर मिर्जा गुलाम अहमद को खलीफा बना डाला। मगर मुसलमानों ने इसे कभी कबूल नहीं किया। उन्होंने इस सम्प्रदाय अहमदियों को ही काफिर और सर्क घोषित कर दिया।

Inside Back Cover

ब्रिटिश इतिहासकार सर थॉमस डब्ल्यू. अर्नोल्ड ने अपनी पुस्तक 'द खिलाफत' में कहा है कि बगदाद के अन्तिम खलीफा तुर्क शासकों के हाथ में कठपुतली थे। सन् 1928 में इन शासकों ने खलीफा मुकतदीर की हत्या करवा दी और उसकी जगह उसके भाई काहिर को उत्तराधिकारी बनाया। दो वर्ष बाद ही उसकी आंखें निकलवा दी गई और उसे जेल में डाल दिया गया। उसकी जगह उसके भतीजे रादी को खलीफा बनाया गया। काहिर पेट भरने के लिए मस्जिदों में भीख मांगा करता था। बगदाद के तुर्क शासक जिसे चाहते थे खलीफा बना देते थे और जिसे चाहते थे खिलाफत के पद से हटाकर उसकी हत्या कर देते थे।

INDIA POLICY FOUNDATION
॥ प्रदीपयेम जगत् सर्वम् ॥

भारत नीति प्रतिष्ठान
डी-51, प्रथम तल, हौजखास, नई दिल्ली-110016
दूरभाष : +91-11-26524018 फैक्स : +91-11-46089365
ई-मेल : indiapolicy@gmail.com
वेबसाइट : www.indiapolicyfoundation.org

ISBN : 978-93-84835-09-5

मूल्य : 50 रुपये मात्र